

॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ संकल्प्य एकीकृत्य कुल्यानि अस्थीनि कुल्यस्यात्कीकृ  
वनं प्रविशतानेन वायुभक्षेण धीमता ॥ अग्नयः कारयित्वेष्टिमुत्कृष्टा इति नः श्रुतं ॥ २ ॥ याजकास्तु तस्तस्य तानग्नीन्निर्जने वने ॥ समुत्सृज्य यथाकामं जग्मुर्भ  
रत सत्तम ॥ ३ ॥ सविद्वस्तदावद्विर्वने तस्मिन् न भूल्लिल ॥ तेन तद्वनमादीप्तमिति ते तापसा ब्रुवन् ॥ ४ ॥ सराजा जाह्नवी तीरे यथा ते कथितं मया ॥ तेनाग्निना समा  
युक्तः स्वैनवभरतर्षभ ॥ ५ ॥ एवमावेदया मासुर्मुनयस्ते ममानघ ॥ ये ते भागीरथी तीरे मया दृष्टा युधिष्ठिर ॥ ६ ॥ एवं स्वेनाग्निना राजा समायुक्तो महीपते ॥ माशो  
चिथास्त्वं नृपतिं गतः सपरमां गतिं ॥ ७ ॥ गुरुशुश्रूषया चैव जननी तेजनाधिप ॥ प्राप्तासु महतीं सिद्धिं मिति मे नात्र संशयः ॥ ८ ॥ कर्तुं महसि राजेन्द्र तेषां त्वमुदक  
क्रियां ॥ आत्तभिः सहितः सर्वैरेतदत्र विधीयतां ॥ ९ ॥ वैशंपायन उवाच ततः सपृथिवीपालः पांडवानां पुरंधरः ॥ निर्ययौ सहस्रो दयः सदारश्च नरर्षभः ॥  
॥ १० ॥ पौरजानपदाश्चैव राजभक्तिपुरस्कृताः ॥ गंगां प्रजग्मु रभितो वाससैकेन संवृताः ॥ ११ ॥ ततो वगात्सलिले सर्वे ते नरपुंगवाः ॥ युयुत्सु मग्नतः कृत्वा ददु  
स्तोयं महात्मने ॥ १२ ॥ गांधार्याश्च पृथायाश्च विधिवन्नाम गोत्रतः ॥ शौचं निवर्तयंतस्ते तत्रोषुर्नगराद्बहिः ॥ १३ ॥ प्रेषयामास सनरान् विधिज्ञानात्कारिणः ॥  
गंगाद्वारं नरश्रेष्ठो यत्र दग्धो भवन्नृपः ॥ १४ ॥ तत्रैव तेषां कृत्यानि गंगाद्वारे न्वशात्तदा ॥ कर्तव्यानीति पुरुषान् दत्तदेयान् महीपतिः ॥ १५ ॥ द्वादशेऽहनि तेभ्यः सकृ  
त शौचो नराधिपः ॥ ददौ श्राद्धानि विधिवद्दक्षिणां वंति पांडवः ॥ १६ ॥ धृतराष्ट्रं समुद्दिश्य ददौ सपृथिवीपतिः ॥ सुवर्णं रजतं गाश्च शय्याश्च सुमहाधनाः ॥ १७ ॥  
गांधार्याश्चैव तेजस्वी पृथायाश्च पृथक् पृथक् ॥ संकीर्त्य नामनी राजा ददौ दानमनुत्तमं ॥ १८ ॥ यो यदिच्छति यावच्च तावत्सलभते नरः ॥ शयनं भोजनं यानं मणि  
रत्नमथो धनं ॥ १९ ॥ यानमाच्छादनं भोगान् दासीश्च समलंकृताः ॥ ददौ राजा समुद्दिश्य तयोर्मात्रोर्महीपतिः ॥ २० ॥ ततः सपृथिवीपालो दत्त्वा श्राद्धान्यनेक  
शः ॥ प्रविवेश पुरं राजानं गं वारणाङ्ग्यं ॥ २१ ॥ ते चापि राजवचनात्पुरुषा ये गता भवन् ॥ संकल्प्य तेषां कुल्यानि पुनः प्रत्यागमंस्ततः ॥ २२ ॥ माल्यैर्गंधैश्च  
विविधै रर्चयित्वा यथाविधि ॥ कुल्यानि तेषां संयोज्य तदा च ख्युर्महीपतेः ॥ २३ ॥ समाश्वास्य तुराजानं धर्मात्मानं युधिष्ठिरं ॥ नारदोऽप्यगमद्राजनं परमार्थि यथेप्सि  
तं ॥ २४ ॥ एवं वर्षा ण्यतीतानि घृतराष्ट्रस्य धीमतः ॥ वनवासे तया त्रीणि नगरे दश पंच च ॥ २५ ॥

क्षेपिकेतिमोदिनी प्रत्यामममृगंगामितिशेषः ॥ २२ ॥ संयोप्यगंगयेतिशेषः ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥

11	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
----	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----